



नटराज स्तोत्रं (पतञ्जलि कृतम्)-चरणशृङ्गरहित श्री नटराज



<https://www.chalisa.online>

॥ नटराज स्तोत्रं (पतञ्जलि कृतम्) ॥

चरणशृङ्गरहित श्री नटराज स्तोत्रं

सदञ्चित-मुदञ्चित निकुञ्चित पदं झलझलं-चलित मञ्जु कटकं ।
 पतञ्जलि दृगञ्जन-मनञ्जन-मचञ्चलपदं जनन भञ्जन करम् ।
 कदम्बरुचिमम्बरवसं परमम्बुद कदम्ब कविडम्बक गलम्
 चिदम्बुधि मणिं बुध हृदम्बुज रविं पर चिदम्बर नटं हृदि भज ॥ 1 ॥

हरं त्रिपुर भञ्जन-मनन्तकृतकङ्कण-मखण्डदय-मन्तरहितं
 विरिञ्चिसुरसंहतिपुरन्धर विचिन्तितपदं तरुणचन्द्रमकुटम् ।
 परं पद विखण्डितयमं भसित मण्डिततनुं मदनवञ्चन परं
 चिरन्तनममुं प्रणवसञ्चितनिधिं पर चिदम्बर नटं हृदि भज ॥ 2 ॥

अवन्तमखिलं जगदभङ्ग गुणतुङ्गममतं धृतविधुं सुरसरित्-
 तरङ्ग निकुरुम्ब धृति लम्पट जटं शमनदम्भसुहरं भवहरम् ।
 शिवं दशदिगन्तर विजृम्भितकरं करलसन्मृगशिशुं पशुपतिं
 हरं शशिधनञ्जयपतङ्गनयनं पर चिदम्बर नटं हृदि भज ॥ 3 ॥

अनन्तनवरत्नविलसत्कटककिङ्किणिझलं झलझलं झलरवं
 मुकुन्दविधि हस्तगतमद्दल लयध्वनिधिमिद्धिमित नर्तन पदम् ।
 शकुन्तरथ बर्हिरथ नन्दिमुख भृङ्गिरिसङ्घनिकटं भयहरम्
 सनन्द सनक प्रमुख वन्दित पदं पर चिदम्बर नटं हृदि भज ॥ 4 ॥

अनन्तमहसं त्रिदशवन्द्य चरणं मुनि हृदन्तर वसन्तममलम्
 कबन्ध वियदिन्द्रवनि गन्धवह वह्निमख बन्धुरविमञ्जु वपुषम् ।
 अनन्तविभवं त्रिजगदन्तर मणिं त्रिनयनं त्रिपुर खण्डन परम्
 सनन्द मुनि वन्दित पदं सकरुणं पर चिदम्बर नटं हृदि भज ॥ 5 ॥

अचिन्त्यमलिवृन्द रुचि बन्धुरगलं कुरित कुन्द निकुरुम्ब धवलम्
 मुकुन्द सुर वृन्द बल हन्तृ कृत वन्दन लसन्तमहिकुण्डल धरम् ।
 अकम्पमनुकम्पित रतिं सुजन मङ्गलनिधिं गजहरं पशुपतिम्
 धनञ्जय नुतं प्रणत रञ्जनपरं पर चिदम्बर नटं हृदि भज ॥ 6 ॥

परं सुरवरं पुरहरं पशुपतिं जनित दन्तिमुख षण्मुखममुं
 मृडं कनक पिङ्गल जटं सनक पङ्कज रविं सुमनसं हिमरुचिम् ।
 असङ्गमनसं जलधि जन्मगरलं कवलयन्त मतुलं गुणनिधिम्
 सनन्द वरदं शमितमिन्दु वदनं पर चिदम्बर नटं हृदि भज ॥ 7 ॥

अजं क्षितिरथं भुजङ्गपुङ्गवगुणं कनक शृङ्गि धनुषं करलसत्
 कुरङ्ग पृथु टङ्क परशुं रुचिर कुङ्कुम रुचिं डमरुकं च दधतं ।
 मुकुन्द विशिखं नमदवन्ध्य फलदं निगम वृन्द तुरगं निरुपमं
 स चण्डिकममुं झटिति संहतपुरं पर चिदम्बर नटं हृदि भज ॥ 8 ॥

अनङ्गपरिपन्थिनमजं क्षिति धुरन्धरमलं करुणयन्तमखिलं
 ज्वलन्तमनलं दधतमन्तकरिपुं सततमिन्द्र सुरवन्दितपदम् ।
 उदञ्चदरविन्दकुल बन्धुशत बिम्बरुचि संहति सुगन्धि वपुषं
 पतञ्जलि नुतं प्रणव पञ्जर शुक्रं पर चिदम्बर नटं हृदि भज ॥ 9 ॥

इति स्तवममुं भुजगपुङ्गव कृतं प्रतिदिनं पठति यः कृतमुखः
 सदः प्रभुपद द्वितयदर्शनपदं सुललितं चरण शृङ्ग रहितम् ।
 सरः प्रभव सम्भव हरित्यति हरिप्रमुख दिव्यनुत शङ्करपदं
 स गच्छति परं न तु जनुर्जलनिधिं परमदुःखजनकं दुरितदम् ॥ 10 ॥

इति श्री पतञ्जलिमुनि प्रणीतं चरणशृङ्गरहित नटराज स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ <https://www.chalisa.online> ॥